

(1)

श्रीरामचंद्राय नमः॥ निघालाकाक्रमितचोमा॥ साजेसर्पसिनिउपमा॥ अंगवायोसुदलातेणेहमा॥ मागे
उन्मळणजालि॥ १॥ रघुनाथरागगनिसंचरे॥ तेसाउर्ध्वजातसेवदे॥ पुनरपिजधोपंधेउत्तरे॥ लंकामध्ये
प्रदेसि॥ २॥ आकाशाहुनिपउसपक्षपर्वु॥ किंवैकुंठिहुनिउत्तरेवैनतामु॥ कीजेसेकाळचक्रचरांतु॥ वा
कीअवनिवदि॥ ३॥ किंहीमालयाचिठाकु॥ सावरीपडलावज्रकलोकु॥ नानाअस्तावल्हामाथातेजाकु॥
तरपिउत्तरेजेसा॥ ४॥ येसियापरिवाळिसुनु॥ रावणसनेआवागनातु॥ उत्तरलातेअकस्मातु॥ सम
स्तादेखता॥ ५॥ निशाचरीबाणलामेंउपु॥ मित्रांसनिउपविष्टलंकानु॥ अंगरामानसिनिर्मयसंक
ल्लु॥ सनेमध्येप्रवेशला॥ ६॥ रिसेपर्वताहुनिउपजा॥ तारणीसमाणतेजाळा॥ अलंकारलेईलातन
किरळा॥ तेनेसन्गाउवडली॥ ७॥ येसाअंगदुदेखितलेळा॥ सुर्वसिउपजळाकाटाळा॥ पंचउलोहा
आगळा॥ हातिवासविन्याससेसी॥ ८॥ पुष्टीविवाडुमेंउपन्तजा॥ धियाचामेनुअंगदुउला॥ अमान्यक
रुनिसर्वसमा॥ पुढेरावणचिल्लसिला॥ ९॥ सिंहदण्डपाहेबाउपु॥ कीशार्धुबेलसिळानोहननु॥ नानाकु
मोन्वक्रुषिनेसंपुर्ण॥ जळराशीदेखिता॥ १०॥ असेमियापरीतारासुते॥ नेत्रियाहाबोलेरावणाने॥ आ
पिरावणेहिअंगराते॥ देखितेहेसे॥ ११॥ मार्तंडराहोदेखिलागगनि॥ किरीलेसमिपवज्रपानि॥ नानाराइ
पक्षियेसमधरणी॥ सिंहपुढेदेखिता॥ १२॥ आनिवृहिकैसागमला॥ जैसामृकनेमूळपादविला॥ किकळा
ग्रहोउनिवाला॥ हराव्यासर्वश्व॥ १३॥ येसारावपोअंगदुदेखिलानयेनि॥ मयळाश्रिर्यवाउलेमनि॥ जैसा
अजेनेसर्पुदेखिलानयेनि॥ तेसातच्छस्तराहीला॥ १४॥ सभानायकनिशाचर॥ मंत्रिमहायोधेबंधुकुमड॥ पाह

तचिदेलेपरिउत्त॥ कोन्हिकोन्हसिनबोले ॥ १५ ॥ सकळसज्जतदस्तजणोनि ॥ अगदेविन्यानुकेलामनि ॥ स
गलांमुंळचक्रायाजसनि ॥ रावणासमुखेवैसला ॥ १५ ॥ हणेमौन्यधरिलनिळावरि ॥ फळनकेनबोलता
उत्तरि ॥ आताजापणवियेअवेश्वरी ॥ उद्धर्मकंठेबोलावयाचि ॥ १६ ॥ नदिहविसिस्वारसागरु ॥ मिजानि
वणुशब्दमथळाकरु ॥ सिताअथवासंग्रामयेकप्रकाश ॥ साधोनिजाउपा ॥ १७ ॥ पुर्विसमस्तसुरासुरी ॥
मथनकेलेसिरसागरी ॥ हास्तवनिघालिबोली ॥ तनबेनुईरा ॥ १८ ॥ येसिअगदेविन्यानुनिबुजी ॥ यथन
आहंमिलेशब्दसिद्धि ॥ मगहणोपसिन्नायागर्वनिधी ॥ वधुणमाळिकामासी ॥ १९ ॥ मजपाशुनियातेदे
खेनि ॥ मोन्यपउलेसर्वाचावरनि ॥ दककपाहाकपतिजेचनि ॥ कोन्हिकोन्हसिनबोले ॥ २० ॥ धर्ममा
र्गतवैसांनके ॥ आलियातेचतुर्थप्रकरेपुस ॥ तनजपाहतातुलीअपवे ॥ वागाशुन्येअसाल ॥ २१ ॥
केरवकेचित्रकेलेनिर्माण ॥ किजकियापडिलेपा ॥ केरातरिजेसेजणेविण ॥ तैसेमिरेखतसेतुला ॥ २२ ॥
राजहंसदेखोनिउळा ॥ संतापेवायसाचमेळ ॥ निरुगंधाहोनिउळा ॥ एंगाळसावकरानवडे ॥ २३ ॥
क्रिकुजिळतासर्वायेअंतःकर्णी ॥ किअभिमानेरिबोलीवाणि ॥ किमयाचिवैसलीकनाणी ॥ वदनि
खोळीपउली ॥ २४ ॥ किविपन्नअलियासनेआंत ॥ अयोग्यासिलगेधुउकाबहुत ॥ नानावाधुद
र्शनेअमत ॥ वळसाब्रशजते ॥ २५ ॥ येसेमजदेखतांविशणी ॥ सकळजंगलेतिअंतःकर्णी ॥ पुरवळयेक
चिहवाणि ॥ म्हाणपुरवेहोउनिठेलेति ॥ २६ ॥ रावणाहोनासमराया ॥ मीकोणजालेकोनाकार्याहेतु
होयोग्यपुसावया ॥ किमर्थनकाचि ॥ २७ ॥ मीरचितमेतुमचिवचणे ॥ परितुनपुससिद्धिर्षअभिमानेआतामि

(७४)

सीधुआलोचनधुनंदने ॥ पाठविलेआहे ॥ येथे ॥ मजरुपालतुकोपाकोपाचा ॥ वृत्तिआईकमिजात्मजुवचि
चा ॥ दुतहोयेसुधिवाया ॥ अंगदुनाममासे ॥ ७३ ॥ रघुनाथाविनिजांगणा ॥ पतिव्रतातेगुनानना ॥ तुलाधरो
निदुष्टवासना ॥ निसळंकेसिआनिले ॥ ७४ ॥ अविवेकास्तक्कस्मात् ॥ तुलसिनिघकर्मजालेप्राप्तहोसि
यापातकासिप्रायश्चित्त ॥ घेतलेपाहिजे ॥ ७५ ॥ हरीपरद्वयपरवनिता ॥ परमहोबग्निलाविआवयिता ॥ वि
श्रासपातकिवधिनिदीस्ता ॥ तोजातनारिबोलीजे ॥ ७६ ॥ ऐसियाचाभातुरीनिघटीका ॥ साहोसकेहेमुमि
का ॥ निवृत्तिनाहिपातका ॥ देहांतप्रायश्चित्तबोलीजे ॥ ७७ ॥ पदितुवांमनीचगालंकेगा ॥ धरिलीकामबुद्धी
सितांशा ॥ स्पर्शलानाहिसरोशा ॥ साक्षात्कारकनि ॥ ७८ ॥ बहुतरिवसहेजनकूनंदिनी ॥ आहेतुमये
अशोकवनि ॥ मीमांसाआलोतयेलागुनि ॥ सा ॥ पंचांगणा ॥ ७९ ॥ श्रीरामासीसितेचेनिवियोगे ॥ पठिका
जातिजेसियुगे ॥ सिंधुबैतरोनिलंकावेढीलीवे ॥ पुलागिसिद्धजाले ॥ ८० ॥ अंतरपडेलराजनितिमि
नणोनिमजपाठविलेसिस्ठईसि ॥ तुजरिनाय ॥ नवितुडेयुद्धासि ॥ प्रवर्ततिलजाणा ॥ ८१ ॥ तदिसर्वप्र
काइलंकनाथा ॥ सिस्ठारकरणेसर्वथा ॥ संग्रामास ॥ येउमयरब्बया ॥ किमर्थआटवावे ॥ ८२ ॥ आतागाव
सिधपरियेसि ॥ मैथुळियेईसदिसि ॥ प्रीतिपुर्वकरघुनाथासि ॥ हेईउदारपने ॥ ८३ ॥ जैसेथोरनाम्यमैथु
ळिश्वरे ॥ रामपुजीलाओउशोपचारे ॥ जातकिभेहजारडे ॥ सुमहुतेसमर्पिली ॥ ८४ ॥ ऐसापिधरुनियासंक
लु ॥ गोरविरामुबयोध्यानु ॥ तदिहाबुवनत्रकिर्तिदिपु ॥ प्रकाशलतुसा ॥ ८५ ॥ जन्माजालियासारिवे ॥ की
र्तिकराविविचनोमुखे ॥ वर्तमानअसतानापासुखेपुठिलेसिधावि ॥ ८६ ॥ पाहिपाहेतुवड ॥ सर्वस्वेंकैसेउत्त

विश्वाकारणे निरंतरं उपकार करीति ॥ १५ ॥ खास वापल वच चामुखे ॥ पत्रे पुष्पे रत्न फले ॥ मन इच्छा देति याहि वेगेवे
 अपि वही करीति ॥ १६ ॥ तिर्वसुय चिकिर्ष ॥ अस्तमान पर्यंत साहति व्यापण ॥ खाया पाउनि कमनि वारणा ॥ ता
 प लियाचा करीति ॥ १७ ॥ वात प्रजस्य सित उष्णा गाढे ॥ व्याही साहति प्रिय के कडे ॥ सदा सत्व धरुनि पुढे ॥
 कोप करा कारणे ॥ १८ ॥ कुठाराचा ति क्षण धारी ॥ करि निचंदना चिकाउरी ॥ दुःख ना हि सिजे सिजे बरि ॥
 निव विप्रि मं ताते ॥ १९ ॥ आपद मृगे वे परहसी ॥ तजि ति व्यापुली या देहाने ॥ कस्तुरिका देति देसा देवाने ॥
 नोगा वया लागी ॥ २० ॥ हाठ कप उतारयावे कडे ॥ पिठे पिठे चेंब्यां नरे ॥ लावण्य न संडि च आदरे ॥ मिरवे नो
 कया देहि ॥ २१ ॥ आय का होसु र्य येने ॥ लोकोपकार कारणे ॥ सर्वदामे नु वेष्टित मने ॥ विप्रांति कदा नहि ॥ २२ ॥
 वनस्पति कवामते ॥ २३ ॥ करी लोकोपकाराते ॥ दया नरी हा वाते ॥ कुहिय न मनि ॥ २४ ॥ आपुले निरारि दे कष्टे
 नि ॥ धण्य ने उपकार करि निजनि ॥ राया परोपकारात ॥ त्रिभुवनि ॥ पुण्य हि सत नाहि ॥ २५ ॥ पद पिउ पनते
 पातक ॥ शास्त्रे शोधितान हि से जानिक ॥ धन्य धन्य ॥ नवी धार्मिक ॥ देह उपकारी वेचिति ॥ २६ ॥ हे होना सि
 वंत नारि ॥ २७ ॥ असा रसा उनि येर जे सार ॥ पउलियाचे आदि प्रकार ॥ प्रालब्धा सारी खे ॥ २८ ॥ देहो जरा मर
 मंजा चरे ॥ पउतं वरि मरण मरे ॥ पुढे नोगा वया केले उरे ॥ अविनाश जीउ ॥ २९ ॥ लोहा चिय अंग रंगाति ॥
 पावकाते पिउ जे सार वाति ॥ ते सा जीवा ते नोग प्राप्ति ॥ देह चे निस मं धे ॥ ३० ॥ परमार्थ बुद्धि आपुले
 हित ॥ पुरुषा विचार वे निष्ठात ॥ ये रु विजज्ञाणास्त वज्र कर्मात ॥ दुःख नोगि जेत आहि ॥ ३१ ॥ मिथ्या हि प्र
 पंच माया जाळ ॥ विवेके नो उनि सांउ वे स कळ ॥ सी कता कार्य ता हे समुळ ॥ उपडुनि सांउ वे ॥ ३२ ॥ सजन

३४

बैराग्यज्ञाने॥ साधाविसंसारद्वेदकसाधने॥ कामक्रोधमदमहेदयवेसने॥ देवाधउकुरावि॥ ७०॥ रायामासेनिउपदेसो॥ दु
 रवधहिजेतुषसेलनुसेनिमानसे॥ तरिमिसागतनाहितैसे॥ जेराज्यसाडुनिजावे॥ ७१॥ जयापडिजनकराये॥ राज्यमा
 गिजेविदेहिआये॥ तैसेराजीववतासंसारनय॥ बाधिनाकदा॥ ७२॥ कामनिजांगनेसिपुर्णकिजे॥ क्रोधदुष्टावरीसोडि
 जे॥ महुरसंसाररात्रुसिचाळिजे॥ महुजोडिजेसंबल्लावरी॥ ७३॥ नळनिपणजैसेजळी॥ तैसेनळिपावेकर्ममेळी॥
 बलविहेविश्वजेळी॥ देखोनिस्वरूपिदमावे॥ ७४॥ तदिसर्गसुखाचापाउदनियाहोति॥ त्रिविधामुक्तिमार्गिपडति॥
 निर्गुणसायोज्यमुक्ति॥ माजिमिळनिहोईल॥ ७५॥ समुद्रिप्रजयावायेबुढा॥ पडलियानिवडेलकोआवाढा॥ तै
 सेसायोज्यानजालियायेकवाढा॥ महाप्रबईनिवडेन॥ ७६॥ ब्रह्माब्रह्मांडासहितलयाते॥ पाविलबुडति
 तिनुते॥ परिर्लंगनाहिसायोज्यमुक्ति॥ तेसामहाप्रबईबुडसे॥ ७७॥ जितुकिपदेसायोज्यावाउति॥ तेनाश
 पावतिपुन्याचेअंति॥ पुनरपिभवन्नोगप्राप्ति॥ योआसिलसजीवयोनी॥ ७८॥ ह्मणोनिसर्वनैश्वरलंकनाथा
 दुरवदायककर्मकरणेवथा॥ आनांदष्टोपातिपसाया॥ सितदेनेरामासी॥ ७९॥ परवस्तिसिहोरउदासु॥ उर
 वित्रैलोकितिर्तिपोरु॥ विबुद्धासहितमहेषु॥ सैतोरुपावेल॥ ८०॥ श्रीरामासिरामांदिअंतुरी॥ देउनिब्रह्मांड
 आनंदेनरि॥ तरीनुजभोगेललंकापुदि॥ ध्रुवमंडळाजिसि॥ ८१॥ व्यापुलेसर्वस्वअर्पितिराजे॥ सायिकिर्ती
 विश्वतोमुरवेगजे॥ ह्मणोनियायेयासिदेईजे॥ तरियंधियेकायवेये॥ ८२॥ बळिनेत्रिपांडमेदिनी॥ अर्पिचोखा
 वामनालायुनि॥ त्यास्तवनोभूतबभुवनी॥ चिदंजीवनांदनुसे॥ ८३॥ रायाआतांबोलणकायबहुवस॥ सर्वथा
 घेईनिर्देशायेना॥ जेनेअपकिर्तिचेपोरा॥ तुढेनिजातिल॥ ८४॥ पुनुपमलतेनप्रकादे॥ येराजोउवेवळाकोरे॥
 तरितेयेनाकेसेनृपवरे॥ नावेकपरीसवि॥ ८५॥ यशाचेरुभूतेचिवेळा॥ आर्शिकितीनाहिजीमुपाळा॥ हेब्रह्मांडजया

की

चैकळा॥ धवळले आहे॥ ६५॥ येनासि शुभ्र वर्ण अधिक॥ हेतवं शुभ्र गाकितेक॥ काय करी ते जाले कैतुंक॥ ते परि
 सनैनु सनाथा॥ ६६॥ विमळ शुभ्र ता येना असे सि॥ असे वि हो लुणो नि दृष्णामानसि॥ या ला गि कोणे पां के सि॥ सा
 धना जाई मी ली॥ ६७॥ जो ठिची कृपा क्षिर सागने॥ विष्णु सिस मर्पि ठी जा दे॥ हंस सस्य लोका जा उण्णारी॥ जल
 याचे व हण जाले॥ ६८॥ चंद्र दुःखे कळहि न जाला॥ चुदा सी दे हो दे उ नि वे ला॥ त्रापे सु ना न मा था पे त ला॥ पात
 लीत पकरी तु वसे॥ ६९॥ सस्य नुरंग मज्जि माना चढले॥ उग्र कर्मा सि प्रवर्तले॥ इवी र धि नि ये नि करी ते जाले॥ से
 उचि प्रदक्षणा॥ ७०॥ उ उ ग ने ग ग नो दरी॥ वैसे ली वा या चक्रा वरी॥ त पकरी ना री च व ति पृथ्वा वरी॥ कि तै त वं
 प उ ति दे र वा॥ ७१॥ धवळा गिरी स बहु त वे द्या॥ द्वा रणी घाला सा वि म्ब ना था॥ त्रि व पु री उ न्न लु नि मा था॥ वा हि
 ली जसे ते ने॥ ७२॥ असे असे बहु ता परी॥ कष्ट करी त सि धा पि वरी॥ त ही ये ना चे शु भ्र ते चि सरी॥ को री
 पा वे चि ना॥ ७३॥ शिव बोली जे जति धवळा॥ पदि चो ला ग आ हि नि ला॥ ये ना सि अ र वं उ अ धि क कळा॥ शु
 भ्र संपु र्ण सा या॥ ७४॥ विं र चि अं डा बा हे रि ज ला॥ या ना ये ना ने र्म न॥ अ से सिया सि ये कि उ प मा प डे के वळ॥ द्यु ना था
 चे म न जै से॥ ७५॥ अ से ते ये ना नि का च र ना था॥ अं सि का री सि ता दे र स र्व था॥ वि प री त बु द्धि चे न दि स म र्व था॥ ज
 छं क्रि डा क रु न को॥ ७६॥ वैसे अंग दा चि वा गे श्वरी॥ रा व ना ते बो ध वि वि वे के करी॥ प रि तो ति व्ब नु ल्य ह द या मी
 तरी॥ चो र वा कु न के चि॥ ७७॥ पर मा र्थ ध र्मि का चे म न॥ ते ये र मे ना दु ष्ठा चे चि त॥ नि त्या नि स वि चा रि उ न्न त॥ वि
 च दे ना व द्दा॥ ७८॥ अ स त पाल धि या य दा॥ वरी प डे पा नि या चा र्य बु डा॥ तो वा हा लु चि गे ला वा ठा॥ प रि था वे ना
 क र्ता॥ ७९॥

उग्याने आधनिचा तलागोळा॥ परी तो न ये पा का ते ॥ ८०॥

निंबरहासिबाधलेआळे॥ पंचामृतेनरीलेचिरुकाळे॥ यासिजमृतज्येसियेतिफळे॥ तेनपडेसर्वथा॥ १०९॥ युद्धं
 उचिकांडोरी॥ पिळितिपाशाताचेउरी॥ परिसुनचंभेचिबाहरी॥ वाहंतुचिगेला॥ ११०॥ ज्येसाजंगदराएचिक्काई॥
 त्रसाधारणबोलिलानेसमई॥ परिगवनुनेचेचिहृदई॥ गोपिउक्षीनजैसा॥ १११॥ कुंजरकुसुमवाटिकेआतु॥ बाधलाआळे
 मदेमनु॥ सासिसुगंधवायोसमर्पितु॥ परितोनबैसेयाचियेप्राणि॥ ११२॥ तैसेजंगदाचेबोलने॥ सुधानसासीआनिउपो॥
 परिभकेडुकेलासरावणो॥ तणतुल्यमानिले॥ ११३॥ जंगदुजैसेबोलिलीयावरी॥ रावणप्रयोत्तराचाउपकर्मकरी॥ तेकथानि
 वाचिकोनुकलहरी॥ मर्यादालंघिला॥ ११४॥ इतिश्रीयुध्यकांडस्यमा॥ बाल्मीकिवागदतायिविवंचन॥ तेचतुरीजानिजे
 मना॥ ११५॥ हासमुद्रलक्षणे॥ ११६॥ श्रीरामार्पणमस्तु॥ वैविष्णुप्रा० ११॥ ११७॥ ११८॥ ११९॥ १२०॥ १२१॥ १२२॥ १२३॥ १२४॥ १२५॥ १२६॥ १२७॥ १२८॥ १२९॥ १३०॥







मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com